..इनमेंसे कौन होगा मेरा भाई ? ज़रूर खोज लूँगा....

. . . . . उस रात उस बडी हवेली के अंदर अकेले बैठकर वो सोच रहा था। इतनी साल उसके जीवन का क्या मतलब था ? उसके पास पैसे, ओहदे ये सब तो है। पर कोई अपना नही है। वो किसकेलिए जी रहा है ; ये उसे खुद ही नही पता। उसका ज़िंदगी कई नई मोड ले लिया है। पर आज, उसने ज़िंदगी में पहली बार अकेलापन महसूस किया है। उसका कहानी एक शरणार्थी कैंप में से शुरू हुआ था। जब भारत विभजन किए थे, तब शरणार्थियों का प्रवाह था। ये मुसीबत दूर करने केलिए कुछ साल हुए थे। सभी मुसीबत दूर करने के बाद भी कुछ लोगों को बसेरा नही मिले थे। राम के दादा-दादी भी उनमेंसे दो लोग थे। फिर कहीं उन दोनों को सर लेटने केलिए जगह मिला। तब राम के पापा बहुत छोटे थे। जहाँ वे गए थे, कुछ दिनों के बाद वहाँ राम के माँ भी आई। फिर कुछ साल के गुज़रने के बाद राम के दादा-दादी और नाना-नानी, दुनिया छोड दिया। इसके बाद ही राम के माँ-बाप के शादी हुए थे। वे दोनों फिर जम्मू में रहना शुरू किया। राम को सिर्फ इतना ही पता है कि जम्मू में थोडा शरणार्थियों, और सैन्य का सवालों के बीच, राम के जन्म हुआ था, और किसी धर्मवादियों के आक्रमण में माँ-बाप के मृत्यू हुए थे। ये सब उसे सिस्टर आनी ने बताया जिसने बचपन से आज तक राम का पालन-पोषण किया था। वो बचपन से ही पढने में सबसे

आगे था। इसी वजह से वो एक बड़ी कंपनी के मालिक है। वो सबसे ज्यादा प्यार सिस्टर आनी से ही करता था। एक दिन उसे एक विद्यालय में बच्चों से बातचीत करने केलिए बुलाया गया था। कामयाबी के सबसे बड़े मिसाल था राम। वो इसलिए कि वो सिर्फ चौबीस साल का था, और अनाथ भी। इसलिए राम के जिंदगी से ये सीख मिलता है कि चाहे कुछ भी हो जाए, हमें उम्मीद और हिम्मत नही हारना चाहिए। ~~आज~~

आज का दिन सुबह दस बजे वो बच्चों से मिलने केलिए गए। मासूमियत भरे चेहरे देखते ही सारे ग़म सब भूल जाते है। छोटे छोटे बच्चे, निश्छल मन में कलंक के अंश भी नही है। एक बच्चा राम के आने से ही राम से बातचीत करने केलिए बहुत उत्सुक था। राम ये देखा और उस बच्चे से पूछा, "आपका नाम क्या है बेटा?" उस बच्चे ने बोला, "मेरा नाम गुड्डू है। मैंने आपको टीवी में देखा है।" राम मुस्कुराते हुए ~~बाकी~~ बच्चों से जिंदगी के कुछ कीमती पाठ अपने ही अंदाज में बताया। बच्चें बहुत खुश हुए। गुड्डू ने उठकर राम से कहा, "भैया, मेरा एक भाई है। उसका नाम राजू है। वो भी मुझसे आपके जैसे ही बातें करता है। आपको कोई भाई है मेरे जैसा?" राम का चेहरा बदलने लगा। उसके आँखों से गरम आँसू आने लगा। फिर भी वो आँसू और उसके साथ कई सारे सवाल अपने मन में छुपाकर गुड्डू से बोला, "नही"। फिर वो सभी बच्चों से अलविदा

कहकर निकला। नए नौकरी मिलने के बाद ही राम के खुद के घर हुए। तब तक वो सिस्टर आनी के अनाथ आश्रम में रहता था। विद्यालय से निकलने के बाद राम सिस्टर आनी के पास गए। सिस्टर आनी के चेहरे में राम को देखकर प्रसन्नता खिल उठा। "राम बेटा, तुम"। राम आनी से गले मिला। उसका दबे हुए सारे आँसू प्रलय के जैसा बाहर आया। "अरे बेटा, तुम रो क्यों रहे हो? मेरा बच्चा है न तू? मैंने तुम्हें बताया था न, कभी उम्मीद हारकर आँसू नहीं बहाना चाहिए? तुम हिम्मतवाला है न? मत रो।" आनी ने बोला। राम अपने सवालों के घर का दरवाज़ा खोला। "सिस्टर, मुझे आप से कुछ पूछना है।" सिस्टर ने कहा, "हाँ पूछो"। राम ने पूछा, "सिस्टर, आपने ही कहा था न कि मैं अनाथ नहीं हूँ, उसका वजह बताइए। मैं आपको शरणार्थी कैंप से मिला बच्चा हूँ न? तो मैं अनाथ ही हूँगा न?" आनी अचानक चुप हुए। उसने फिर बोला, "बेटा, मेरा मतलब था कि अब मैं हूँ न तुम्हारे साथ। मैं ने ही तुम्हारे माँ का भूमिका इतनी साल निभाई हूँ।" सिस्टर के बातों से ही राम का अगले सवाल पैदा हुआ"। "सिस्टर, सच सच बताइए, मेरा कोई भाई-बहन है?"। सिस्टर के दिमाग ने जवाब का खोज करने शुरू किया। "नहीं, बेटा, मेरे जान-पहचान में तो तुम्हारा कोई भाई नहीं है।" राम गुस्सा होकर पूछा। "आपने ही मुझे बचपन से

सिखाए थे कि झूठ नही बोलना है। आपका मुँह से साफ साफ दिख रहा है कि ये झूठ है। सच सच बताइए। वरना मैं अभी इसी वक्त जीना खत्म कर दूँगा।" राम रसोई में भागकर एक चाकू निकाला और अपने गले के पास चाकू को पकड़ा। आनी ने हैरान होकर बोला, "नही बेटा नही। तुम समझदार बच्चा है न? न समझों के जैसे मत बरताव किया करो। मैं बताती हूँ सच। पहले अपने चाकू नीचे डाल।" राम ने बोला। "तो बताइये, मेरा भाई-बहन के बारे में।" आनी ने सूखे गले से बताया, "बेटा, तेरा एक भाई है। उनका नाम छोटू है।" राम के आँखों से आनंद की अश्रू आने लगा। "क्या? मेरा खुद का भाई? तो इतनी साल आप ने ये बात मुझे क्यों नही बताए? उनका कोई तस्वीर है? वो कहाँ रहते है अब? सारे बात बताइएन!" सिस्टर ने बोला। "तुम्हारा भाई छह महीनों में एक बार मुझे चिट्ठी लिखता है। तुम्हारा माँ-बाप के मरने के बाद उसने ही तुम्हें मेरे पास सौंप दिया था। तेरे बारे में पूछने केलिए ही वो मुझे चिट्ठी लिखता है। वो अब हिमाचल में एक छोटे विद्यालय में अध्यापक है।" ये सब सुनकर राम आनी से अपने भाई का एक तस्वीर माँगा। तस्वीर लेकर वो निकला।

आश्रम से निकलकर ही वे उस बड़े हवेली के आगे आया। खुद का भाई होने के बावजूद, वो अकेला

जिया इतने साल। अपने भाई के तस्वीर को वो एकबार देखा। उस तस्वीर में चार लोग थे। "इनमें से कौन होगा मेरा भाई? पता करना पडेगा। मेरे जीने की वजह ही अब वो बनेगा। उन्हें लेकर मैं यहाँ आऊँगा और बचे जिंदगी मैं उनके साथ गुज़ारूँगा। उनके साथ ही सोऊँगा। अब मुझे अकेला सोना नही पडेगा।" वो अपने आप से बताया। उसके पीछे ही आनी खडी थी। उसके आँखों में नमी आने लगी। उसने राम को पुकारा, "बेटा, राम" राम ने मुडकर देखा। उस तस्वीर को आनी के पास देकर राम ने पूछा कि इनमेंसे इसका भाई कौन है। आनी ने बोला कि उसे वो पता नही है। जब राम को आनी के पास सौंपा गया था, तब वो बहुत छोटा था। "ये तस्वीर इस चिट्ठी के साथ आया था।" आनी ने एक चिट्ठी राम के हाथों में दिया। उसमें ये लिखा था कि "कभी राम उसके भाई के तलाश में आएगा, तब उसे ये चिट्ठी दे देना।"

राम ने कुछ नही कहा, अपना घर गया और फोन से अगले दिन को हिमाचल केलिए एक टिकट खरीदा। अगले सुबह ही, वो तस्वीर लेकर राम निकला। अपने भाई से एक बार मिलने केलिए उसका जी तरस रहा था। हिमाचल में रेलगाडी पहुँचने के बाद वो सिस्टर आनी को फोन किया।

"सिस्टर, मैं हिमाचल में पहुँच चुका हूँ, आपको जिस पते से चिट्ठी आया, वो पता ज़रा मुझे बता दीजिए।" आनी ने वो पता राम को बताया। राम ने एक रिक्शा में चढ़कर उस पता बताया। रिक्शेवाले ने उसे एक बहुत पुराने विद्यालय के आँगन में छोड दिया। वहाँ कुछ बच्चें बडे आँगन में खेल रहा था। इन्हें देखकर राम को उसका बचपन याद आया। सिस्टर आनी के साथ उसका बीता हुआ दिन, सबकुछ। उसने उस विद्यालय के दफ्तर में गया। उसने पूछा, "मैं मुंबई से आ रहा हूँ। यहाँ छोटू नाम के एक अध्यापक है?" दफ्तर में बडे मूछ वाले एक आदमी ने उससे नीचे आवाज़ में पूछा, "जी आप छोटू जी के क्या लगते है?" राम ने कहा, "हम उनके भाई है।" उस आदमी ने उठा और बोला। "छोटू जी बच्चों को कुछ सामान लेने बाज़ार गए है। अब आते ही होंगे। आप ज़रा यहाँ रुक दीजिए।" राम को बहुत बेचैनी होने लगी। वो कितने भी देर रुकने केलिए तैयार है।

थोडे देर के बाद वहाँ एक गाडी आया। उसमें चार लोग मौजूद थे। राम को ये एहसास हुआ कि उनमें से कोई उसका भाई ही होगा। बच्चे बडे उत्सुक होकर उस गाडी की ओर दौडा। राम के मन में हज़ारों सवाल पैदा हुए। "इनमें से कौन है मेरा भाई? वो अब कैसे दिख रहे होंगे?" ये सबकुछ

वो अपने आप से पूछा। गाडी का दरवाज़ा खोला। ज़िंदगी के साहचर्यों से लडकर बुजुर्ग बना एक जवान आदमी पीछे से निकला। सारे बच्चे उस आदमी को गले लगे। और बच्चों की शोर ने एक साथ कहा, "छोटू दादा आए ..." राम उठा और अपने भाई से मिलने केलिए दौडा। दृढ़ता से भरे उस आदमी के चलन राम की ओर थें। घंटी के बजने से सारे बच्चें अपने अपने क्लास गए। उस आदमी कुछ देर तक राम की ओर देखता रहा। उस आदमी के आँखों से आँसू आने लगी। राम ने उनसे पूछा, "आपको पता है मैं कौन हूँ?" उस आदमी के गंजे सर में दस - पंद्रह सफेद बाल थे। काले पुराने चश्मे उतारकर वो आदमी राम से गले मिला। "मेरा भाई, मुझे पता था कि तुम कभी न कभी मुझे देखने आओगे।" राम ने अपनी सारी बेचैनियों के अंत महसूस किया। जो कुछ भी हुआ, ये उसे बता दिया।

राम ने छोटू से पूछा, "आपको ये कैसे पता चला कि मैं ही आपका भाई हूँ?"। छोटू हँसकर कहा, "तुम्हारा एक तस्वीर हर साल सिस्टर आनी मुझे भेजती रही। तस्वीर से भी अच्छे लगते हो तुम।" राम हँसकर छोटू से फिर गले मिले। छोटू से राम ने पूछा, "क्या एक बार आप मेरे साथ मेरे घर आ सकते हैं? आपको कोई कमी महसूस करने नहीं

दूँगा मैं।" छोटू ने बोला, "मेरा कोई परिवार नही है; खुन से। पर मेरा परिवार है, वो है; ये बच्चें। इन्हें छोड़कर मैं नही आ सकता हूँ। तुम चाहे तो कभी मुझे आकर मिल सकते हो।" राम को बहुत दुखहुआ। उसने कहा, "मैं आज आपके साथ ही सोना चाहता हूँ। अब मैं अनाथ नही हूँ न? मुझे खुद का भाई है न।" छोटू अपने गंजे सिर हिलाकर राम को हाँ कहा। उस दिन दोनों भाई अपने ज़िंदगी के अनमोल पल बिताया। दोनों के ज़िंदगी में हुए सारे बात एक दूसरे से कहा। राम ने कुछ खज़ाना के मिलने के बाद होते खुशी के जैसा अपना चेहरा बनाया और भाई से अलविदा कहकर लौटा। उसने सोचा, "एक बार ही सही, मैं अपने भाई से मिल तो सका। मेरा भी परिवार है भाई के जैसा। वो है सिस्टर आनी और मेरे दोस्त। मैं कभी भी जा सकता हूँ अपने भाई से मिलने। मेरे सारे सपने तो पूरे नही हुए, पर एक तो हुआ न।" वो खुश होकर अपने घर लौटा।

ये बच्चों के जीने का वजह मैं हूँ, इन्हें और कोई नही।

ज़िंदगी कई मोड़ों से गुज़रती है। हर मोड में हमें हिम्मत संभालकर आगे बढ़ना चाहिए। सारे सपने तो नही, पर कुछ सपने ज़रूर पूरे हो सकते है।